International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

'बाल–दिवस' में बालमन को उकेरती कहानियॉ–एक अध्ययन

डॉ. आशुतोष
742 / 33, शान्त नगर, काठ–मण्डी
रोहतक।

ABSTRACT :

भौतिकतावाद, शहरीकरण, औधोगिकरण, आधुनिकता की दौड़, इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी का बढ़ता प्रभाव, अनेको कारण है जिनसे आज का युग मशीनीकरण में तबदील हो गया। बदलते परिवेश मे जहॉ अनेक परिर्वतन हुए वहॉ अध्यापकिय जीवन, शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चे और शिक्षा के स्तर में भी परिर्वतन हुआ हैं। आधुनिक संदर्भ में अध्यापक और अभिभावक भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में बच्चों को पर्याप्त समय नही दे पा रहे हैं। सहस्त्र पुस्तको के सजृन करने वाले साहित्यकार डॉ0 मधुकान्त ने अपने कहानी संग्रह 'बाल–दिवस' में बाल उत्पीड़न, बाल शोषण, अकेलापन, भ्रष्टाचार, मानवीय संवेदनाओं का गिरता स्तर, आदि मानव मस्तिष्क को संकुचित, अविश्वासी और विषाक्त बनाने वाली समस्याओं को उकेरा है। बालको के सर्वांगीन विकास के लिए लेखक स्वयं लिखते है 'बालक को आजाद करना होगा, उसकी जिज्ञासाओं को, सवालों को, धैर्यपूर्वक हल करना होगा, उनके साथ बैठना, खेलना और उनका दोस्त बनना होगा ताकि वे ड़रे नही अपनी मन की बात कह सके। [1]

.....

डॉ0 मधुकान्त के कहानी संग्रह 'बाल–दिवस' की प्रथम कहानी में लेखक ने उद्घाटित किया है कि 14 नवंबर को हम बाल–दिवस के रूप में मनाते हैं उस दिन भी हम बच्चों को महत्व न देकर मुख्य अतिथि, विशिष्ठ अतिथि व अन्य प्रपंचों में उलझकर बालमन को छू नहीं पाते। सुन्दरी के माध्यम से लेखन ने दर्शाया कि बाल–दिवस बच्चों का दिन उस दिन भी हम बच्चों पर अंकुश लगाते हैं, एक उदाहरण–

'स्कूल के बरामदे में एक बैनर लगा था, जिसमें लिखा था, 'बच्चा भगवान का रूप है'। सुंदरी को कुछ अच्छा न लगा। यदि बच्चा भगवान हैं तो भगवान पर जुल्म क्यों किया जा रहा है और सच मानें तो आज का भगवान शिक्षामंत्री है। वह तो उसकी अनुकम्पा पर विवश और परेशान बैठी है।[2]

'सदी के पार' कहानी में लेखक आधुनिकता, भ्रूण हत्या महापाप, नारी सशक्तीकरण, अर्थ प्रधान समाज, भारतीय संस्कृति, बदलता खान–पान, अनेक विषयों पर एक साथ प्रकाश ड़ाला हैं। विशिष्ठ संवाद शैली से नारी के आत्मविश्वास पक्ष को बहुत उम्दा प्रस्तुत किया गया हैं। संवाद शैली का एक उदाहरण देखिए– 'ममा प्ली मुझे ये बताइए, ये घर है या बूचडखाना'–

झुझलाहट में लूकी को कुछ भी ध्यान नही रहा, 'ओह आई एक वैरी–वैरी सॉरी ऑपरेटर, प्लीज मैड़म निशा का नम्बर दीजिए'। ममा की आवाज को उसने पहचान लिया।[3]

'बरगद की बेटी' कहानी में लेखक ग्रामीण अंचल के रीति रिवाजों , सामाजिक कुरूतियां, पुत्र मोह, कन्या बोझ है आदि को राधा नामक पात्र के माध्यम से प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।बरगद की बेटी के माध्यम से प्रकृति प्रेम और 'बाल्यग्राम' की स्थापना एक समाधान के रूप में प्रस्तुत है। 'टयूशन का सच' अभिभावक अध्यापक के बिखरते संस्कार को प्रर्दशित करती हुई सन्देशपरक कहानी हैं अभिभावक पैसे से शिक्षा व संसकार चाहता हैं पक्तियॉ के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है–

'देख लिजिए शास्त्री जी, हमारा काम तो पैसा खर्च करना है, बाकी आप जानो और आपका शिष्य।' कहते हुए लाला जी उठ गए। [4]

'तिरंगा हाउस' में भारतीय ध्वज जो हमारी आन–बान–शान का प्रतीक हैं जिसे हम सबको मान सम्मान देना चाहिए का सन्देश देती कहानी में देश पर शहीद सैनिक परिवार का संवाद देखते ही बनता हैं।आजादी का दिन किस प्रकार एक फौजी के लिए एक त्यौहार होता हैं, कहानी के माध्यम से देश–प्रेम, सेवा सर्मपन के सन्देश को लेखक ने शहीद परिवार के माध्यम से सम्पूर्ण देश को दिया हैं। देश भक्ति से ओत–प्रोत पक्तियॉ देखिए– 'भगते की मॉ यही तो दुख हैं कि स्वतंत्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस दोनों त्यौहार सारे देशवासियों के त्यौहार है परन्तु लोग इन्हें केवल सरकारी त्यौहार मानते है। आजादी के 70 वर्ष के बाद भी ये दोनों महान दिवस हमारे परिवार समाज और संस्कारों का हिस्सा नहीं बना पाए....।' [5]

'झण्ड़ा' कहानी में लेखक मजदूर लीड़र अविनाश और कुटील समाज के टकराव को मार्मकिता से प्रर्दशित करने में सफल रहे। कहानी में महिला दर्शाया है किस तरह महिला को ममत्व और समाज के दिये आघात दोनों को समान लेकर चलना पड़ता हैं– मेरे फटे आंचल को उसने दौलत से सीं देना चाहा लेकिन मैं उन कागज के टुकड़ों को फेंककर अपने घर लौट आई। पति की मृत्यु का उस दिन भी इतना दुख नहीं हुआ था.... पर फिर भी मैंने कठोरता से जीने का निश्चय कर लिया था। [6]

'मेरी मैंम नारायणी' गुरू शिष्य परम्परा को आईना दिखाने के लिए सर्वश्रेष्ठ कहानी हैं अक्षरज्ञान करवाने वाले अपने प्रथम गुरू को हम सफलता के नशे में भूल जाते हैं। शिक्षा अधिकारी के माध्यम से अपनी प्रथम गुरू मैंम नारायणी का सम्मान देकर लेखक ने आर्दश उदाहरण प्रस्तुत किया है– 'प्यारे बच्चों मैम नारायणी ने मुझे प्रथम और द्वितीय कक्षा में अक्षर ज्ञान कराया और मेरे लिए ज्ञान का रास्ता खोल दिया। मुझे अफसोस हैं, अपनी सफलता में मस्त होकर मैं कभी उनका धन्यवाद करने भी नहीं आया।[7]

कहानी 'बालमन' में लेखक ने समाज और घर तक आ चुकी अश्लीलता का बच्चों पर प्रभाव और बालमन माता–पिता के समय और प्यार का हमेशा प्यासा रहता हैं, रिश्तों में ठहराव बालमन पर कुप्रभाव ड़ालता हैं

'पहले मम्मी पापा उसे कितने प्यार करते थे। पापा रोज शाम को पार्क में घुमाने ले जाते थे। मम्मी भी हर रोज उसके बिस्तर पर बैठकर लोरी सुनाती थी और थपथपाकर प्यार से सुलाती थी। मम्मी पहले पास बैठकर होम–टास्क कराती थी। लेकिन अब कहने पर भी टाल देती है। मैड़म तो मुझे ड़ांटती हैं उनका क्या जाता है। जब से घर में वी0सी0आर0 आया है दोनों उसी में लगे रहते हैं उन्हें तो बस फिल्म चाहिए।[8]

'134 ए का दंश' में लेखक ने सरकारी और प्राईवेट स्कूलों में अन्तर दर्शाया हैं, सरकारी नियमों से प्राईवेट स्कूलों में दबाव को बड़े ही शालीनता से दर्शाया हैं। अभिभावक अपने बच्चों पर बेवजह प्राईवेट शिक्षा को थोप रहे हैं, 'बेटा झूठ नही बोल सका। कांपती आवाज में उसने बताया– आपने जबरदस्ती मेरा दाखिला इस स्कूल में कराया। मैं इस स्कूल में नहीं पढ़ना चाहता। मुझे मालूम हैं यहां फेल बच्चों को दाखिला नहीं मिलता इसलिए मैंने पेपर कोरा छोड़ दिया। [9]

'एनेमिया से जंग' नामक कहानी में डॉ0 मधुकांत ने अध्यापक की मनोदशा का वर्णन किया हैं, सरकारी आदेश की अनुपालना भी हो और बच्चों को भी खुश रखना हैं इसके मध्य के रास्ते से सरकारी खजाने में भी नुकसान और विद्यार्थियों को सरकार जो सेहत की गोली देना चाहती हैं वो तालाब में मछलियां खाकर सेहत बना रही हैं – एक क्षण में ही मछलियां सारी टेबलेट लेकर भाग गयीं। इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर दरियावसिंह गद्‌गद् हो गये। मछलियों के स्थान पर उसे अपने गांव के तंदुरूस्त छात्र नजर आने लगे। इल आयरन गोलियों का कमाल ..... काश मेरे गांव के बच्चों को अक्ल आ जाती .....काश वे उन गोलियों को खा लेते। [10]

'बोनेपन का अहसास' में कजरी के माध्यम से दिखाया है कि बौना होने से घर में व समाज में उपहास का पात्र बनकर भी कजरी ने अपनी मेहनत से व अपनी गुरू के आर्शीवाद से मुकाम हासिल करती हैं। 'मेरी बेटी महक' औमप्रकाश के पारिवारिक वातावरण को दर्शाया हैं पति पत्नी के मध्य स्नेह तो देखते ही बनता हैं।लेखक ने बेटी को मॉ का रूप दर्शाते हुए बेटी के स्नेह को पिता के दिल में जगह कैसे मिलती हैं।

मातृभाषा का सुख में डॉ0 मधुकांत ने प्रज्ञांशु बाबू के माध्यम प्राईवेट शिक्षा प्रणाली व अभिभावक किस प्रकार अपने बच्चों पर दबाव ड़ालकर पथभ्रमित करते हैं– एक बार उसका मन क्रोध से भर उठा–क्या अपनी मातृभाषा बोलना कोई अपराध हैं? कोई पाप हैं? फिर मैम रोबिन्सन ने एक शब्द हिन्दी का बोलने पर उसे सजा क्यों दी?[11]

सभी 13 कहानियॉ सन्देशपरक, बालमन का टटोलने के प्रयास में जान पड़ती हैं। मुहावरों का प्रयोग, संवाद शैली उत्कृष्ठ हैं, साहित्यकार का कर्तव्य केवल समस्या उठाना नही वरण समाधान प्रस्तुत करना भी हैं, लेखक डॉ0 मधुकांत ने अपनी सभी कहानियों में बाल मन की समस्याओं को उठाकर उनका समाधान देकर समाज को नई दिशा देने का सार्थक प्रयास किया हैं।

REFERENCES :

1 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' दो शब्द , पृ0 1
2 डॉ0 मधुकान्तः ' बाल दिवस' बाल दिवस पृ0 14
3 डॉ0 मधुकान्तः 'बाल दिवस' सदी के पार पृ0 19
4 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'टयूशन का सच' पृ0 39
5 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'तिरंगा' पृ0 45
6 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'झण्ड़ा' पृ0 56
7 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'मेरी मैम नारायणी' पृ0 63

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

8 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'बालमन' पृ0 72
9 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' '134 ए का दंश' पृ0 81
10 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'एनेमिया से जंग' पृ0 87
11 डॉ0 मधुकान्त : 'बाल दिवस' 'मातृभाषा का सुख' पृ0 109